पुखरायाँ-उ.प्र.। 'त्रिदिवसीय संगीतमय राजयोग शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सपा विधायक नरेंद्र पाल, कांग्रेस जिला अध्यक्ष नीतम सचान, समाजसेवी मधुसूदन गोयल, नगर अध्यक्ष राजकुमारी आर्य, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. अविनाश तथा अन्य।

फतुहा-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए फतुहा के विधायक रामानंद यादव, खुशरूपुर के विधायक रणविजय यादव, समाजसेवी राज कुमार प्रसाद तथा बी.डी.ओ. राकेश कुमार। साथ हैं अन्य भाई बहनें।

बीबीगंज-फर्रूखाबाद(उ.प्र.)। व्यापारी सम्मेलन के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अरुण प्रकाश तिवारी,प्रान्तीय महामंत्री,व्यापार मंडल,ददुआ, ब्र.कु. मंजु, श्रीमति मिथलेश अग्रवाल,उद्योगपति, ब्र.कु. गीता, अनार सिंह यादव,चेयरमैन,मेजर एस.डी.सिंह मेडिकल कॉलेज, देव भाई,हीरा व्यापारी, ब्र.कु. श्यामा तथा अन्य।

बिलाड़ा-जोधपुर(राज.)। सी.आई. ऑफिसर घेवसिंह गुसाईवाल और अधिकारी स्टाफ के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ललिता, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

दिल्ली-दिलशाद गार्डन। 'मेकिंग एग्ज़ाम ईज़ी' विषय पर ग्रेटर नोएडा के जे.पी. इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. रीना। ध्यानपूर्वक सुनते हुए स्कूल की प्रिन्सीपल हिमा शर्मा, अन्य शिक्षक तथा विद्यार्थीगण।

तोशाम-हरियाणा। शिव अवतरण संदेश यात्रा द्वारा गाँव-गाँव जाकर ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. देवराज तथा ब्र.कु. चंद्र।

परमात्मा के निमित्त कार्य निर्बन्धन बनाता

गतांक से आगे...

कर्म, बंधन तब बनता है जब उसमें आसक्ति रहती है। लेकिन जब कोई भी कार्य निमित्त होकर हम करते हैं, परमात्मा का समझते हुए हम करते हैं, तो वो कर्म हमें बांधते नहीं हैं, क्योंकि उसमें आसक्ति नहीं है। परमात्मा कहते हैं, मैं तटस्थ निरपेक्ष हूँ। ये संसार, ये ब्रह्माण्ड जो है इस विराट प्रस्तुतिकरण का मैं हिस्सा नहीं हूँ। मैं स्वयं ही सारी सृष्टि की रचना का स्रोत हूँ। मै मेरी अधिष्ठता के सकाश से चराचर जगत को रचता हूँ। ये संसार चक्र नित्य घूमता रहता है। काल चक्र किस प्रकार चलता है, भगवान ने यहाँ कई जो विरोधाभासी बातें हैं, उसको स्पष्ट किया है। अवश्य परमात्मा वो शक्ति है जिसने सब कुछ रचा है। परमात्मा की सकाश, सकाश अर्थात् शक्ति इस चराचर जगत को रचती है। इस प्रकार ये सृष्टि का चक्र नित्य चलता रहता है। इसको कहा ही गया है कालचक्र, समय का चक्र, सृष्टि चक्र।

चक्र माना जिसका आदि और अंत न हो। जो नित्य चलता रहता है। दुनिया में भी जितने चक्र बने हुए हैं। वो चक्र भी नित्य चलते रहते हैं। दिन और रात का चक्र नित्य चलता रहता है। ऋतुओं का चक्र, मनुष्य पुनर्जन्म का चक्र नित्य चलता रहता है। प्राकृतिक साइकिल को भी अगर देखा जाये तो पानी वाष्पित होकर बादल बनते हैं, वो बादल जाकर के बरसते हैं, वो पानी फिर नदियों के द्वारा समुद्र में मिल जाता है, ये चक्र भी नित्य चलता रहता है। कोई भी चक्र की आदि और अंत नहीं है। दिन और रात के चक्र में कौन-सी घड़ी को आदि कहेंगे, क्या रात को बारह बजे यह चक्र आरंभ हुआ, सुबह चार बजे हुआ, छ: बजे हुआ, दस बजे हुआ, कब हुआ? ये चक्र है। चक्र माना जिसका आदि और अंत नहीं है? जो नित्य चलता रहता है। हाँ, मनुष्य ने अपनी व्यवस्था को बनाये रखने के लिए रात को बारह बजे के बाद दूसरा दिन कह दिया, लेकिन ज़रूरी थोड़े ही है कि रात को बारह बजे ही ये चक्र शुरू हुआ था।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

इसी तरह ऋतुओं का चक्र कब शुरू हुआ, पता नहीं है। हाँ, मनुष्य ने अपनी व्यवस्था को बनाने के लिए पहली जनवरी, नया साल कह दिया। किन्तु ये ज़रूरी थोड़े ही है कि पहली जनवरी को ही ये चक्र आरंभ हुआ। इसलिए कौन सी घड़ी को पहली घड़ी कहेंगे ये नहीं कह सकते, क्योंकि ये चक्र है। ऐसे ही ये सृष्टि का चक्र भी नित्य चलता रहता है, नित्य घूमता रहता है। लेकिन हर चक्र को चार अवस्थाओं से ज़रूर गुज़रना पड़ता है। दिन और रात के चक्र की भी चार अवस्थाएं हैं। सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि, रात्रि के बाद पुन: सुबह होती है।

ऋतुओं में भी चार अवस्था है - ग्रीष्म, शीतकाल, वर्षा और वसंत ऋतु। फिर ग्रीष्म आ जाता। इसी तरह इस काल चक्र की भी चार अवस्थाएं हैं - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग। कलियुग के बाद पुन: सतयुग आता है। ये चक्र है, इसीलिए ये नित्य चलना ही है और नित्य परिवर्तन, ये इस चक्र की प्रक्रिया है। परिवर्तन कुदरत का नियम है। परिवर्तन होता आया है और होता ही रहेगा।

भगवान इसलिए कहते हैं कि हे अर्जुन! कल्प के अंत में, कलियुग का जब अंत हो जाता है, तब सब मेरी प्रकृति अर्थात् मेरे समान स्वभाव को प्राप्त होते हैं। अर्थात् आत्मा पुन: अपने सतोगुण स्वरूप में आ जाती है। कल्प के आदि में मैं उनको बार-बार विशेष रूप से सृजन करता हूँ। आत्मा तो सदा शाश्वत् है, आत्मा न मरती है, न जन्म लेती है फिर कैसे यह सृजन होता है? सृजन अर्थात् जो अकृति या शरीर बिना अचेत है। आत्मा परमधाम में अपने निज स्वरूप में, प्रकाश पुंज में है, उन्हें जागृत करता हूँ। जागृत करके पुन: इस संसार में, प्रकृति का आधार लेने के लिए प्रेरित करता हूँ। तो इस अर्थ में उसके पार्ट को जागृत करना, ये है कि भगवान आकर उसको बार-बार जगाता है अर्थात सृजन करता है। फिर बताता है कि कल्प के लिए प्रेरित करता हूँ। कल्प के लिए प्रेरित करना अर्थात् सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग में पुन:पार्ट बजाने के लिए उसको प्रेरित करता हूँ। कल्प का भाव है - उत्थानोमुख परिवर्तन अर्थात् उत्थान की ओर परिवर्तन अर्थात् आत्मा दैवी संस्कारों में प्रवेश पाती है। यहीं से कल्प का आरंभ होता है। वैसे ये चक्र है। चक्र कब शुरू होगा, कब पूरा होगा ये नहीं कह सकते हैं। इस चक्र की भी आदि अंत का पता नहीं है। उसका पहला प्रहर सुबह को माना जाता है। सुबह के समय में मनुष्यात्मायें जागृत होकर के दिन भर के कर्म के लिए अपने आप को प्रेरित करती हैं और रात को सारा कर्म समेटकर के सो जाती हैं। - क्रमश:

प्रार्थना से ज़्यादा महत्व... - पेज 2 का शेष

स्वहित से ऊपर निकल परहित का विचार करेगा। स्वयं के स्वार्थ का काम करने के बदले परमार्थ का काम करते उनको प्रसन्नता होगी। उनका मन अंदर ही अंदर खुश रहेगा, समय बीतते-बीतते उस व्यक्ति को परायों की प्रसन्नता में स्वयं का सुख लगेगा। वो दूसरों के सुख की झलक देख खुद के अंतर में अपूर्व उल्लास अनुभव करेगा। इस तरह ईश्वर सम्मुख मानव स्वयं की आत्मा की पहचान के साथ-साथ दु:खी और पीड़ित जीवों पर करुणा बरसाता रहेगा। परायों की चिंता करना, ये उनका स्वभाव बन जायेगा, परिजनों की चिंता तो मनुष्य करता ही है। वह समझता है कि उनकी पहली सेवा घर और परिवार से ही होती है। इसलिए ही वह मात-पिता की सेवा के साथ गरीब-दुखियों की सेवा करने का कार्य भी वो करता रहता है। ईश्वर के आशीर्वाद की इच्छा, अपने अंतर में ईश्वर को पाने की ख्वाइश जगाती है। इसी ख्वाइश के कारण ही अपना आत्म विकास होता है। समय बीतते-बीतते बाहर मूर्ति रूप मे विराजित ईश्वर, साधक के हृदय में बसता है। मीरा ने हृदय में श्रीकृष्ण का अनुभव किया, संत तुलसीदास ने हृदय में राम को बसाया। महावीर ने कहा कि आत्मा के साथ ही परमात्मा छुपा हुआ है। जैसे छोटे से गुठली में आम का पेड़ छुपा हुआ है, ऐसे ही ईश्वर की प्रार्थना से ज़्यादा, ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रबल इच्छा साधक के लिए ज़्यादा उपकारक है।

सादुलपुर-राज.। 'श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान प्रवचन माला' कार्यक्रम के समापन सत्र में ब्र.कु. वीणा को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए लाल मोहम्मद भियानी,महामंत्री,राज. अभाव अभियोग प्रकोष्ठ, डॉ. विनोद अग्रवाल, डॉ. सुनील शर्मा,प्राचार्य तथा डॉ. नंदकिशोर मरोदिया,अध्यक्ष,अग्रवाल महासभा। साथ हैं ब्र.कु. चंद्रकांता तथा ब्र.कु. शोभा।

ख़्यालों के आईने में...

जब आप धन कमाते हैं तो घर में चीज़ें आती हैं, लेकिन जब आप किसी की दुआएं कमाते हैं तो धन के साथ 'खुशी', 'सेहत' और 'प्यार' भी आता है।

मिट्टी का मटका और परिवार दोनों एक जैसे ही हैं...
ऐसा इसलिए कि इसकी कीमत सिर्फ बनाने वाले को ही पता होती है, तोड़ने वाले को नहीं...
और दोनों ही टूटने के बाद जुड़ने मुश्किल हैं...!